2 हमारी वर्णमाला

Our Alphabet

मुख से निकली आवाज़ों को **ध्वनि** कहते हैं। इन ध्वनियों से ही भाषा बनती है। जब इन ध्वनियों को बोला या लिखा जाता है, तो उसे **वर्ण** कहते हैं। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित वर्ण होता है।

बस, पत्ता और गमला ये तीनों शब्द ध्वनियों से मिलकर बने हैं।

बस

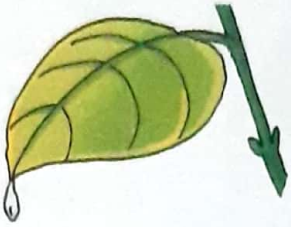

पत्ता

गमला

इन शब्दों को तोड़कर उनकी ध्वनियों को अलग-अलग करके देखा जा सकता है–

ब् + अ + स् + अ	=	बस	चार ध्वनियों का प्रयोग
प् + अ + त् + त् + आ	=	पत्ता	पाँच ध्वनियों का प्रयोग
ग् + अ + म् + अ + ल् + आ	=	गमला	छह ध्वनियों का प्रयोग

इन शब्दों को तोड़कर उनकी ध्वनियों को अलग-अलग किया गया है, उन्हें और नहीं तोड़ा जा सकता। अत: ये ध्वनियाँ ही वर्ण कहलाती हैं।

वर्णों का व्यवस्थित रूप ही **वर्णमाला** कहलाता है। वर्णों को मिलाने से शब्द बनते हैं और शब्दों को मिलाकर वाक्यों का निर्माण होता है। हर भाषा की अपनी लिपि और अपनी वर्ण-व्यवस्था होती है। हिंदी वर्णमाला में वर्ण दो प्रकार के होते हैं। 1. स्वर, 2. व्यंजन। आइए हिंदी की वर्णमाला जानें–

स्वर

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, उन्हें **स्वर** कहते हैं। हिंदी में स्वरों की संख्या ग्यारह (11) होती है।

Scanned with CamScanner

अनुस्वार (ं) अं	अनुनासिक ँ	विसर्ग (:) अः

व्यंजन

जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर वर्णों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें **व्यंजन** कहते हैं। हिंदी में व्यंजनों की संख्या तैंतीस (33) है, जो इस प्रकार है–

कवर्ग	–	क	ख	ग	घ	ङ	
चवर्ग	–	च	छ	ज	झ	ञ	
टवर्ग	–	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़ ढ़
तवर्ग	–	त	थ	द	ध	न	
पवर्ग	–	प	फ	ब	भ	म	
अंत:स्थ	–	य	र	ल	व		
ऊष्म	–	श	ष	स	ह		
संयुक्त व्यंजन	–	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		
आगत स्वर और व्यंजन	–	ऑ	ज़	फ़			

याद रखिए, 'ड़, ढ़' से कोई शब्द आरंभ नहीं होता। ये सदैव शब्द के बीच या अंत में आते हैं। जैसे–

ड़ → पेड़, साड़ी, टुकड़े, लड़के

ढ़ → पढ़ना, सीढ़ी, पीढ़ी, पढ़िए

संयुक्ताक्षर– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ये व्यंजन दो व्यंजनों के मेल से बने हैं, इसलिए इन्हें **संयुक्त अक्षर** कहते हैं।

क्	+	ष	= क्ष	–	कक्षा, क्षमा, क्षत्रिय
त्	+	र	= त्र	–	पत्र, पुत्र, त्रिनेत्र, त्रिमूर्ति
ज्	+	ञ	= ज्ञ	–	ज्ञान, ज्ञानी, संज्ञा, आज्ञा
श्	+	र	= श्र	–	श्रम, श्रमिक, श्रीमान, आश्रम

(यही चार मुख्य संयुक्त व्यंजन हैं)

इनके अतिरिक्त कुछ और ध्वनियाँ भी हैं, जिन्हें आप अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) और विसर्ग (:) के नाम से जानते हैं।

(ं) → अनुस्वार का उच्चारण नाक से किया जाता है; जैसे– अंगूर, झंडा, तिरंगा, सुंदर आदि।

(ँ) → अनुनासिक का उच्चारण गले और नाक दोनों से होता है; जैसे– आँख, मुँह, पूँछ, आदि।

(:) → विसर्ग का उच्चारण 'ह' की तरह होता है; जैसे– अत:, प्रात:, स्वत:, प्राय:, पुन: आदि।

Scanned with CamScanner